International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 139-141

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 139-141
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-05-2023
Accepted: 19-06-2023

आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

आचार्य धनञ्जय के नाट्य भेदक तत्व की दृष्टि से उत्तररामचरितम् नाटक का अनुशीलन

आसुतोष कुशवाहा

सारांश
भारतीय संस्कृत वाङ्मय का स्वरूप दो रूपों में मिलता है–वैदिक साहित्य और लौकिक संस्कृत साहित्य।वैदिक साहित्य के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद आादि । वही लैकिक संस्कृत साहित्य को काव्यशास्त्रीय दृष्टि से दो भागो में विभक्त किया गया है– श्रव्य काव्य, दृश्य काव्य।श्रव्य काव्य (गद्य पद्य, चम्पू) एवं दृश्य काव्य में दस नाट्य या रूपक तथा उपरूपक का विधान किया गया है। श्रव्य काव्य की अपेक्षा दृश्य काव्य (नाटक) में रस की प्रधानता होती है संस्कृत नाट्य में नाटक को श्रेष्ठ माना गया है। इसमें गद्य–पद्य दोनो का मिश्रण तो रहता है। अपितु सुनने के अतिरिक्त देखा भी जाता है। श्रव्य की अपेक्षा दृश्य का अधिक प्रभाव प्रेक्षक या सामाजिक पर पड़ता है।इसीलिए काव्येषु नाटकं रम्यम् कहकर नाटक को काव्य का सर्वोत्तम अंग स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में कवि भवभूति कृत उत्तररामचरितम् नाटक का अनुशीलन आचार्य धनंजय के ग्रन्थ दशरूपक में प्राप्त नाट्य भेदक तीन तत्व –वस्तु, नेता, और रस को लेकर किया गया है।

कूटशब्द : वस्तु, नेता, रस

प्रस्तावना
संस्कृत नाट्य साहित्य में महाकवि भवभूति 650ई0 से 750ई0 के बीच अर्थात् सातवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध का समय विद्वानों द्वारा माना जाता है। इनके पितामह भट्टगोपाल, पिता नीलकण्ठ, माता जातुकर्णी, गुरु ज्ञाननिधि व कुमारिभट्ट थे। भवभूति का दार्शनिक नाम उदुम्बर तथा जन्म स्थान दक्षिण भारत में पद्मपुर नगर मिलता है। ये काष्यप गोत्र तथा कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखापाठी ब्राह्मण थे। भवभूति कान्यकुब्जनरेश यशोवर्मा के आश्रयदाता माने जाते हैं। इनकी तीन रचनाएँ 1–मालतीमाधवम् (प्रकरण), 2–महावीरचरितम् (नाटक), 3–उत्तररामचरितम् (नाटक) मिलती है। भवभूति गौड़ी रीति, करुण को प्रियरस, तथा अनुष्टुप और शिखरिणी को प्रिय छन्द मानते हैं। साथ ही पदवाक्यप्रमाणज्ञ की उपाधि मिलती है।
संस्कृत नाट्यशास्त्र के विषय को आधार मानते हुए आचार्य धनंजय ने दशरुपकम् नामक ग्रन्थ की रचना की है। दशरुपकम के प्रथम प्रकाष में आचार्य धनंजय ने नाट्य भेदक तीन तत्व वस्तु, नेता और रस पर चर्चा की है।

वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः।[1]

इसी नाट्यभेदक तत्व की दृष्टि से भवभूति विरचित उत्तररामचरित सात अंको के नाटक का अनुशीलन इस प्रकार करते हैं–

वस्तु
आचार्य धनंजय ने वस्तु के दो भेद माने है– अधिकारिक तथा प्रासंगिक वस्तु। वस्तु को ही अन्य आचार्यों ने कथावस्तु, इतिवृत्त कहा है। वस्तु च द्विधा।

तत्राधिकारिकं मुख्यमङ्गं प्रासङ्गिकं विदुः।[2]

अधिकारिक कथावस्तु नाटक की मुख्य कथा होती है। इसमें अधिकार रुप में फल का स्वामित्व नायक होता है और नाटक के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक नायक की कथा चलती है। वहीं प्रासंगिक कथावस्तु दो प्रकार की कही गई है– पताका और प्रकरी। पताका कथावस्तु नाटक में दूर तक चलती है। इसका नायक दूसरा व्यक्ति होता है जो मुख्य नायक से न्यून गुणों वाला होता है तथा इसके कार्य का उद्देश्य कोई स्वतन्त्र न होकर मुख्य नायक के फल प्राप्ति में सहायक होता है। प्रकरी कथा वस्तु नाटक में आने वाले छोटे–छोटे प्रसंगों या कथानकों को कहा जाता है।

अधिकारः फलस्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभुः।
तन्निर्वृत्तमभिव्यापि वृत्तं स्यादाधिकारम्।।[3]

प्रासङ्गिकं परार्थस्य स्वार्थो यस्य प्रसङ्गतः।
सानुबन्धं पताकारव्यं प्रकरी च प्रदेशभाक्।।[4]

भवभूति प्रणीत उत्तररामचरितम् नाटक की कथा प्रख्यात है जो महर्षि वाल्मीकि के रामायण महाकाव्य के उत्तरकाण्ड कथा को मूलस्रोत के रुप में रखा गया है। नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से अधिकारिक कथावस्तु में उत्तरामचरित के नायक अयोध्यापति दशरथ के पुत्र राम तथा मिथिला नरेश जनक की पुत्री सीता के परित्याग और अन्त में पुनर्मिलन की कथा मिलती है।
वही पताका कथावस्तु में लव के प्रसंग तथा प्रकरी कथावस्तु में शम्बूक का प्रसंग रखा जा सकता है।[5]

नेता

उत्तररामचरित नाटक के नायक राम अयोध्या के राजा है। इनमें वे सभी गुण विद्यमान है जो आचार्य धनंजय ने दशरुपकम में लिखा है कि नायक विनीत, मधुर, त्यागी, चतुर, प्रिय बोलने वाला, लोकप्रिय, पवित्र, वाक्पटु, प्रसिद्ध, वंश वाला, स्थिर, युवक, बुद्धि–उत्साह–स्मृति–प्रज्ञा–कला तथा मान से युक्त, दृढ़, तेजस्वी, शास्त्रों का ज्ञाता और धार्मिक होना चाहिए।

नेता विनीतो मधुरस्त्यागी दक्षः प्रियंवदः।
रक्तलोकः शुचिर्वाग्मी रुढवंशः स्थिरो युवा।।
बुद्धयुत्साहस्मृति प्रज्ञा कलामानसमन्वित।
शूरो दृढश्च तेजस्वी शास्त्रचक्षुश्च धार्मिकः।।[6]

राम धीरोदात्त कोटि के नायक है। भवभूति ने राम को लोकप्रिय राजा के रुप में चित्रित किया है और राम को कहीं भी भगवान् नहीं कहा है। ये मर्यादा पुरुषोत्तम कहे गये हैं। इस प्रकार से आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पिता, और आदर्श भाई आदि लोकोत्तर चरित राम में समाहित है। राम प्रजानुरंजन के लिए र्स्वस्व अर्पण की बात करते हैं।

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।[7]

प्रस्तुत नाटक उत्तररामचरित की नायिका सीता है। सीता को स्वकीया नायिका के कोटि में रखा जा सकता है। ये एक आदर्श सती साध्वी नारी हैं। इनमें शील, सदाचार, पतिव्रता, धैर्य, धार्मिक, इत्यादि गुणों का योग है। किन्तु जनापवाद के कारण अपमानित, तिरस्कृत और राजमहल से राम के द्वारा निर्वासित भी किया जाता है। सीता एक विधुरा का जीवन व्यतीत करती है। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में लव और कुश को छोड़कर पाताल में चली जाती है। इनका जीवन अत्यन्त करुण पूर्ण है। वही राम के प्रति सीता का स्नेह अपार है। राम के मूर्च्छित होने पर वे अदृश्य रुप में राम को सहारा प्रदान करती है। इस प्रकार से अन्ततः राम निर्दोष सीता को स्वीकार करते है। कुश और लव का माता–पिता से मिलन तक की घटना के अभिनय में सीता देखने को मिलती है।[8]
अन्य पात्रों में गोदावरी, भागीरथी, तमसा, मुरला, वासन्ती (वनदेवता), पृथ्वी, आत्रेयी, वशिष्ठ, कौशल्या, मुनिबालक सौधातकि, गुप्तचर दुर्मुख, लव, कुश, चन्द्रकेतु, वाल्मीकि, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न अष्टावक्र, दण्डायन, सुमन्त्र, अरुन्धती, जनक, कंचुकी मिलते है।[9]

रस

महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरित नाटक में करुण रस को मुख्य और अन्य रसों में श्रृंगार, हास्य, भयानक, वीभत्स, वीर, रौद्र, वात्सल्य तथा शान्त का वर्णन किया है।
नाट्यशास्त्रीय मान्यता है कि नाटक में श्रृंगार या वीर रस ही अंगी रस होना चाहिए। अपितु भवभूति ने अपनी मति से करुण रस को प्रधान मानते हुए उत्तररामचरित् नाटक की रचना की।
भवभूति करुणरस के विषय में कहते है। यह पुटपाक के समान होता है।

पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।[10]

तथा एक करुण रस ही है जो कारण भेद से भिन्न होकर पृथक–पृथक (श्रृंगारादि) परिणामों को प्राप्त करता हुआ प्रतीत होता है। यथा– जल ही भँवर, बुलबुला, तरंग आदि विकारों को प्राप्त करता है। क्योंकि वे सब जल ही है।

एको रसः करुण एव निमित्तभेदाद्।
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तान्।।
आवर्तबुद्बुदतरङ्गमयन्विकारा
नम्भो यथा, सलिलमेव हि तत्समस्तम्।।[11]

भवभूति ने उत्तररामचरित के प्रथम अंक में तथा अन्यत्र चित्रदर्शन आदि प्रसंगो में राम–सीता के प्रणय सम्बन्धों में संभोग श्रृंगार रस के दर्शन होते हैं।
वही सीताहरण आदि प्रसंगो के वर्णन में वियोग श्रृंगार को अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। सीताहरण के चित्र को देखकर लक्ष्मण राम की दशा विशेष को बताते हैं कि आपके विलाप को देखकर पत्थर भी रो पड़े थे और व्रज का हृदय भी फट गया था।

जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरित
रपि ग्रावा रोदित्यापि दलति व्रजस्य हृदयम्।।[12]

उत्तररामचरितम् नाटक में अद्भुत रस सि दर्शन अनेक स्थलों पर मिलता है। क्रौंच–पत्नी–वध को देखकर वाल्मीकि के मुख से सहसा शोक श्लोक रुप में परिणित होना।

मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।[13]

शम्बूक वध के प्रसंग में अद्भुत रस का परिपाक हुआ है।

शम्बूको नाम वृषलः पृथिव्यां तप्यते तपः।[14]

रौद्र रस के सुन्दर दृश्य उत्तररामचरित् नाटक में देखने को मिलते है। वही जानकी के परित्याग का कारण जानकर सारी जनता को अपने चाप और शाप से नष्ट करने को तैयार जनक के दृश्य में रौद्र रस की दृश्यता देखने को मिलती है।

शान्तं वा रघुनन्दने तदुभयं तत्पुत्रभाण्डं हि मे।
भूयिष्ठद्विजबालवृद्धविकलस्त्रैणश्च पौरो जनः।।[15]

हास्य रस उत्तररामचरित के चार प्रसंग में मिलता है– अण्टावक ऋषि के प्रवेश वर्णन, सीता उर्मिला के चित्र की ओर संकेत में लक्ष्मण के मुस्कराने के वर्णन में, चतुर्थ अंक के आदि में सौधातकि और दण्डायन के वार्तालाप में तथा बच्चों के द्वारा घोड़े का वर्णन भी हास्य रस की निष्पत्ति करता है।[16]

भयानक रस का न्यून वर्णन देखने को मिलता है फिर भी चित्रदर्शन में परशुराम का चित्र देखकर सीता के डरने में, चित्रदर्षन में सूर्पणखा के विवाद दृश्य में आदि।[17]

वीभत्स रस के वर्णन न्यून नही है। राम का गर्भिणी सीता के निर्वासन में स्वंय को वीभत्सकर्ता कहने में[18] तथा

वन में गिरगिट द्वारा अजगरों का पसीना पी रहे हैं वर्णन आदि में तृष्यद्भिः वीभत्स रस दिखलायी पड़ता है।[19]

वात्सल्य रस के प्रसंग उत्तररामचरित् में बहुत ही सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त हुआ है। यथा–सीता का कुश–लव की स्मृति से भाव–विभोर होना और स्तनों में दूध उभरना आदि।[20]

तथा पुत्र माता–पिता के प्रेम का आधार तथा दोनों के लिए आनन्द की गॉठ है।[21]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम देखते है कि कवि भवभूति ने उत्तररामचरित नाटक को सात अंको में परिणित करते हुए वस्तु, नेता और रस पेशलता की दृष्टि से उत्कृष्ट बनाया है। उत्तररामचरित नाटक नाटकीय अभिनय, संस्कृत रंगमंच, नाट्य कला इत्यादि दृष्टि से भी संस्कृत नाट्य साहित्य में अनुपम कृति है।

सन्दर्भ

1. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
2. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
3. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/12
4. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/13
5. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–23
6. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–2/1–2
7. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–1/12
8. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–129–130
9. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–139–140
10. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–3/1
11. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–3/47
12. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–1/28
13. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–2/5
14. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–2/8
15. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–4/5
16. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–106
17. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–भूमिका पृष्ठ–106
18. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–2/10
19. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–2/16
20. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–3 वा0 79–81
21. उत्तररामचरितम्/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–3/17
22.